परिवर्तिनी एकादशी के मंत्र

"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः" और "ॐ नमः श्रीमद्वत्सलाय नमः"

परिवर्तिनी एकादशी पौराणिक कथा

जब युधिष्ठिर ने भगवान से कहा! भगवन भाद्रपद शुक्ल एकादशी का क्या नाम है? इसकी विधि क्या हैं तथा इसका महत्व कृपा करके कहिए।

तब भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि ये पुण्य, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली तथा सब पापों का नाश करने वाली, उत्तम वामन एकादशी का महत्व मैं तुमसे कहता हूं अब ध्यानपूर्वक सुनो।

यह पद्मा/परिवर्तिनी एकादशी जयंती भी कहलाती है। इसका यज्ञ करने से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। पापियों के पाप नाश करने के लिए इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं।

जो मनुष्य इस एकादशी के दिन मेरी (वामन रूप की) पूजा करता है, उससे तीनों लोक पूज्य होते हैं। अत: मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य को ये व्रत अवश्य ही करना चाहिए।

जो कमलनयन भगवान का कमल से पूजन करते हैं, वे अवश्य ही भगवान के समीप जाते हैं।

जिसने भाद्रपद शुक्ल एकादशी का व्रत और पूजन किया, उसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित तीनों लोकों का पूजन किया। अत: हरिवासर अर्थात एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए। इस दिन भगवान करवट लेते हैं, इसीलिए इसको परिवर्तिनी एकादशी भी कहते हैं।

भगवान के वचन सुनकर युधिष्ठिर बोले कि भगवान! मुझे अति संदेह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते और करवट लेते हैं तथा किस प्रकार से राजा बलि को बांधा और वामन रूप रखकर लीलाएं कीं? चातुर्मास के व्रत की क्या विधि है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्तव्य है। सो भगवन आप मुझे विस्तार से बताइए।

श्रीकृष्ण ने कहा कि हे राजन! अब आप सब पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करें। त्रेतायुग में राजा बलि नामक एक दैत्य था। वह मेरा परम भक्त था। विविध प्रकार के वेद सूक्तों से मेरा पूजन करता था और नित्य ही ब्राह्मणों का पूजन तथा यज्ञ का आयोजन करता था लेकिन इंद्र से द्वेष के कारण उसने इंद्रलोक तथा सभी देवताओं को जीत लिया था।

इस कारण सभी देवता एकत्रित होकर सोच-विचार करके भगवान के पास गए। बृहस्पति सहित इंद्रा आदि देवता प्रभु के निकट जाकर और नतमस्तक होकर वेद मंत्रों द्वारा भगवान का पूजन और स्तुति करने लगे। अत: मैंने वामन रूप धारण करके पांचवां अवतार लिया और फिर अत्यंत तेजस्वी रूप से राजा बलि को जीत लिया।

इतनी वार्ता सुनकर युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन! आपने वामन रूप धारण करके उस महाबली दैत्य को कैसे जीता?

श्रीकृष्ण कहने लगे मैंने वामन रूपधारी ब्रह्मचारी ब्राह्मण के रूप में बलि से तीन पग भूमि की याचना करते हुए कहा ये मुझे तीन लोक के समान है और हे राजन यह आपको अवश्य ही देनी होगी।

राजा बलि ने मेरी इस याचना को तुच्छ याचना समझकर तीन पग भूमि देने का संकल्प मुझको दे दिया और मैंने अपने त्रिविक्रम रूप को बढ़ाकर यहां तक कि भूलोक में पद (पैर), भुवर्लोक में जंघा(जांघ), स्वर्गलोक में कमर, मह:लोक में पेट, जनलोक में हृदय, यमलोक में कंठ की स्थापना कर सत्यलोक में मुख, और उसके ऊपर मस्तक स्थापित किया।

सूर्य, चंद्रमा आदि सब ग्रह गण, योग, नक्षत्र, इंद्रादिक देवता और शेष आदि सब नागगणों ने विविध प्रकार से वेद सूक्तों से प्रार्थना की। तब मैंने राजा बलि का हाथ पकड़कर मैने कहा कि हे राजन! एक पैर से पृथ्वी, दूसरे से स्वर्गलोक पूर्ण हो गए। अब तीसरा पैर मैं कहां रखूं?

तब दैत्यराज बलि ने अपना शीश झुका कर उसपर पग रखने का अनुरोध किया और मैंने अपना पैर उसके मस्तक पर रख दिया जिससे मेरा वह भक्त पाताल को चला गया। फिर उसकी विनती और नम्रता को देखकर मैंने कहा कि हे बलि! मैं सदैव तुम्हारे निकट ही रहूंगा। विरोचन पुत्र बलि के कहने पर भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन बलि के आश्रम में मेरी मूर्ति की स्थापना हुई।

इसी प्रकार दूसरे क्षीर सागर में शेषनाग के पष्ठ (फन)पर हुई! हे राजन! इस एकादशी को भगवान शयन (सोते) करते हुए करवट लेते हैं, इसलिए तीनों लोकों के स्वामी भगवान विष्णु का उस दिन पूजन करना चाहिए। इस दिन तांबा, चांदी, चावल और दही का दान करना सर्वथा उचित है। रात्रि को जागरण अवश्य ही करना चाहिए।

जो विधि पूर्वक इस एकादशी का व्रत करते हैं, वे सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाकर चंद्रमा के समान प्रकाशित होते हैं और यश को प्राप्त होते हैं। जो इस पाप नाशक कथा को पढ़ते और सुनते हैं, उनको हजार अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती हैं।